International Journal of Applied and Universal Research **E-ISSN No: 2395-0269**
Volume IX, Issue VI, Nov – December 2022 **Available online at: www.ijaur.com**
Impact Factor- 5.908

बदलते सामाजिक परिवेश में उपेक्षित बुजुर्ग एक सामाजिक अध्ययन

श्री गणेश मन्तारे
सहा. प्रध्यापक समाजशास्त्र
शा. पी. जी. कालेज सिवनी म.प्र.

***शोध सारांश*–**: पाश्चात्य प्रभाव एवं आधुनिकीकरण की चकाचौंध ने भारतीय मल्यों पर तीव्र कुठाराघात किया है। युगों –युगों से भारतीय समाज को अच्छी स्थिति प्रदान करने वाली संस्थाऍ आज लड़खड़ा रही है। जीवन भर परिवार के लिए मरने खपने वाली वृद्धा आज अपने को बेसहारा पा रही है। उनकी स्थिति ठीक उस दीपक के समान है जिसने जीवन भर दूसरों को प्रकाश दिया है और आज उसकी बुझती शिखा (बत्ती) को कोई स्नेह (तेल) देने वाला भी नहीं है।

मुख्य शब्द : उपेक्षित बुजुर्ग, औद्योगीकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण।

प्रस्तावना–:
भारतीय समाज में वृद्धों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय संस्कृति की यह मान्यता रही है कि आने वाली पीढ़ियॉ उनके परिपक्व अनुभव से बहुत लाभ उठा सकती है। उन्हे अपनी वृद्ध माता एवं पिता द्वारा दिये गये सामाजिक मल्यों को अपने आचरण में उतार लेने चाहिए। इसलिए वृद्धावस्था को सम्मान की दृष्टि से देखा जा सकता है।

जैसे –जैसे संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन होता जा रहा है। वैसे –वैसे वृद्ध उपेक्षा की शिकार होती जा रही है नई परिस्थितियों में पुरानी मान्यताओं का महत्व पूर्णतः धूमिल होता जा रहा है और वृद्ध परिवार के लिए बोझ और समस्याऍ बनते जा रहें है। वृद्धों की संख्या में निरन्तर वृद्धि और व्यक्तिगत व पारिवारिक स्तर पर बढ़ती हुई उपेक्षा के कारण उनकी देखभाल अब सामाजिक चिंता का विषय बनती जा रही है। राष्ट्र और देश के लिए आने वाले वर्षो में इस समस्या को सुलझाने के लिए बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है वृद्धावस्था न केवल समाजशास्त्रियों आरै मनोवैज्ञानिकों बल्कि सरकार के ध्यान का विषय बनती जा रही है।

नारी की स्थिति के सम्बन्ध में वैदिक युग को स्वर्णिम काल कहा जा सकता है। क्योकि इस काल खण्ड में उसकी स्थिति चर्मोत्कर्ष पर थी। जहॉ नारी को उचित सम्मान दिया जाता था। शास्त्रों में नारी की महत्ता और उसकी गरिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है कि नारी वह श्रद्धा पवित्रता कला और वो सब कुछ है जो इस संसार मे सर्वश्रेष्ठ के रूप में दृष्टिगोचर होती है। नारी मूर्तिमान, कामधेनु, अन्नपूर्णा और सब कुछ है जो मानव प्राणी के समस्त अभावों कष्टो और संकटो को निवारण करने मे समर्थ है। यदि इसे श्रद्धाशक्ति सद्भावना से सींचा जाये तो यह सोमलता विश्व के कण –कण को स्वर्णिम परिस्थितियों से ओत प्रोत करती है।

सिन्हा ए0 के0 पी0 ने लिखा है कि ग्रामीण वृद्ध की पृष्ठभूमि का अध्ययन करने के लिए लिंग, धर्म, जाति, आयु, शैक्षिक स्तर, वैवाहिक स्थिति, सामाजिक आर्थिक स्तर, पारिवारिक संरचना, आवासीय दशायें आदि का गहन तथा सूक्ष्म अध्ययन करना आवश्यक इसलिए है क्योकि इनमे से कुछ बिन्दु ग्रामीण समुदाय की विशेषताओं के अन्तर्गत आते है। ग्रामीण संस्कृति का अध्ययन करने के लिए इन सभी स्वतन्त्र चरों का सहारा लिया है।

वर्तमान समय में वृद्ध अपने ही घर में अपने आप को उपेक्षित महसूस करती है। परिवार मे तीन पीढ़ी के सदस्य रहते है। मगर एक दूसरे से अंजान। प्रत्येक सदस्य की अपनी अलग –अलग दुनियॉ है। वृद्धों के लिए किसी के पास समय नहीं है। वे परिवार मे केवल दो समय का भोजन, वस्त्र और सिर छुपाने के लिए चारपाई भर स्थान की मोहताज बनकर रह गयी है। आज नई पीढ़ी को अपने कार्यो में पुरानी पीढ़ी का दखल तो दूर सलाह तक लेना स्वीकार्य नहीं है परिवार में वृद्धों का सम्मान खो चुका है। नई पीढ़ी के लोग उनके अनुभवों का लाभ नहीं लेना चाहते है। वृद्ध जब रहन –सहन, खानपान व अन्य बातों मे दखल देते है तो नई पीढ़ी के लोग उनकी उपेक्षा करते है। वे इस उपेक्षा को सहन नहीं कर पाते है और अपने आपको उपेक्षित महसूस करते है। जिससे वृद्धों और युवा वर्ग मे शीत संघर्ष चलता रहता है।

अध्ययन के उद्देश्यः–
प्रस्तुत शोध पत्र में वृद्धों की समस्याओं को जानने एवं उनका निराकरण करने के लिए सुझाव देने का प्रयास किया गया है। वृद्धावस्था मानव जीवन की सामान्य स्थिति है, जिन्दगी की सभी अवस्थाओं में अपनी अलग –अलग समस्याऍ होती

है। वृद्धावस्था की समस्याएँ सर्वाधिक जटिल होती है क्योंकि इस अवस्था मे व्यक्ति शारीरिक रूप से अक्षम हो जाता है। प्रस्तुत शोध का यही प्रमुख उद्देश्य है कि आज के वैज्ञानिक एवं भौतिक युग में वृद्ध उपेक्षा एवं तिरस्कार का शिकार क्यों हो रहे है ? आखिर उन्हें वह मान –सम्मान एवं अपनापन क्यों नहीं मिल रहा है जो पहले मिलता था। प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार है –

1. वृद्धों मे उपेक्षित होने का भाव क्यों उत्पन्न होता जा रहा है ?
2. वृद्धों को परिवार मे बोझ क्यों समझा जाता है ?
3. वृद्ध परिवार तथा समाज से क्या प्रत्याशाएँ रखते है ?
4. वृद्धों की विभिन्न प्रकार की समस्याओं का पता लगाना।
5. समस्याओं के निदान के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।
6. वृद्धों की समस्याओं के समाधान के लिए सरकारी एवं गैरसरकारी संगठनों के द्वारा किये गये प्रयासों का मूल्यांकन करना।

वृद्धों की समस्याएँ–

वृद्धावस्था को जीवन का अंतिम पड़ाव एवं समस्याओं से घिरी हुयी अवस्था माना जाता है क्योंकि इस अवस्था मे अनेक समस्याएँ वृद्धों को घेरे रहती है। जिसके परिणामस्वरूप वह दसूरों के साथ अपना सांमजस्य स्थापित करने में असमर्थ रहती है।

जे0 पी0 पचौरी के अनुसार – ''समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से वृद्धावस्था की एक प्रमुख समस्या समाज के साथ उनके सही समायोजन न होने की है। अधिकांशतः वृद्ध स्वास्थ्य के गिरने, नौकरी से हट जाने, और आमदनी में कमी आ जाने के कारण काफी मानसिक तनाव महसूस करने लगती है, जिसके कारण उनमे निराशा, कुण्ठा, नकारात्मक व्यवहार तथा उत्तेजना आदि की भावनाएँ पनप जाती है'' ।1

एस0 डी0 सिंह के अनुसार – '' भारत में वृद्धों की समस्या पर विचार करने के लिए सम्पूर्ण वृद्धों को दो भागों मे वर्गीकृत किया जा सकता है प्रथम – वे वृद्ध जो सरकारी एवं गैरसरकारी नौकरी से निवृत्त है तथा द्वितीय वे वृद्ध जो जीवन भर कार्य करते रहते है। कभी सेवानिवृत्त नहीं होते। वृद्धावस्था मे सेवानिवृत्त व्यक्तियों को, अन्य व्यक्तियों की तुलना में अनके समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वे उस समय अपने आपको अधिक परेशान व असुरक्षित महसूस करते है। जब उनकी आर्थिक सहायता करने वाला कोई न हो। निःसन्तान, अविवाहित एवं परित्यक्त व जीर्ण –शीर्ण शारीरिक अक्षमता तथा रोग ग्रस्तता के कारण भी अपने को असहाय पाते है। सेवा निवृत्त वृद्धों की एक प्रमुख समस्या उनके खाली समय के उपयोग की भी है। सुखी जीवन की अनवरतता तथा समुदाय के साथ अन्तः क्रिया दोनों अनिवार्य है। इसलिए वृद्धों की सक्रियता तथा उपयोगिता की भावना को बनाये रखने के लिए समाज को उनकी बौद्धिकता एवं सम्पूर्ण जीवन के ज्ञान भण्डार से लाभ उठाने के लिए प्रयास किये जाने चाहिए।''2

प्रो0 सिलावट सुधा एस0 के अनुसार –''वृद्धावस्था को उम्र, शारीरिक स्थिति तथा मानसिक दशाएँ निर्धारित करते है। इस अवस्था में व्यक्ति की उत्सुकता में कमी, निराशा, आलस्य, अक्षमता, चिढ़चिढ़ापन, एकाग्रप्रियता, सामंजस्य का अभाव, उपदेश देना प्रमुख है। जो कि शारीरिक तथा मानसिक लक्षण है। ऐसे व्यक्ति आत्मकेन्द्रित, संवेदनशील, निराशावादी एवम भविष्य के प्रति चिंतित रहते है। इसलिए अपना जीवन व्यवस्थित तथा संतुलित नहीं कर पाते है। इनकी प्रमुख समस्याओं में समय व्यतीत करने तथा मनोरंजन की समस्या, आवास की समस्या, सामाजिक सामांजस्य, आर्थिक तथा पूँजी को देखभाल सम्बन्धी समस्याएँ प्रमुख होती है। ''3

प्रो0 सुनील गोयल के अनुसार ''वृद्धावस्था कोई बीमारी नहीं है बल्कि मानव के जीवन चक्र की अंतिम दशा है, स्वाभाविक जैवकीय प्रक्रिया है तथा प्रत्येक मानव के लिए अनिवार्यता है। इसमें भॉति – भॉति की समस्यायें शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक तथा आर्थिक होती है। इनके जीवन के अनुभवों का लाभ लेने के लिए इन्हें समाज तथा परिवार में एकीकृत तथा सामजंस्य करने के प्रयास किये जाने चाहिए ताकि वृद्धजनों की समस्याओं की समाधान किया जा सके।''4

प्रो0 रानी वन्दना ने अपने आनुभविक अध्ययन के आधार पर लिखा है कि ''वर्तमान संदर्भ में परिवार की सत्ता एवं प्रभाव वृद्धों के हाथ से छिनकर परिवार के अन्य सदस्यों विशेषकर युवाओं के हाथों में हस्तान्तरित हो रही है। वृद्धों की स्थिति आश्रित सी हो गयी है ''5

समय की रफ्तार के साथ समाज में नये –नये परिवर्तन होने लगते है। नई पीढ़ी पुरानी विचारधारा की वृद्धों को पसन्द नहीं करते है और वृद्ध जब नई पीढ़ी के रहन–सहन, तौर तरीके तथा अन्य बातों में दखल देते है तो युवा पीढ़ी वृद्धों की उपेक्षा एवं अनदेखी करने लगते है। तब इस उपेक्षा को

वृद्ध सहन नहीं कर पाते है और वे अपने आपको अपमानित महसूस करते है जिसके फलस्वरूप वृद्धों एवं युवा वर्ग में आम तौर पर शीत संघर्ष चलता रहता है जो परिवार में तनाव उत्पन्न करता है वास्तविकता यह कि वृद्ध किसी भी प्रकार के परिवर्तन को पसन्द नहीं करते है ऐसी परिवर्तनशील परिस्थितियों में सामाजिक व पारिवारिक सामंजस्य स्थापित करने में या तो उन्हें समस्याएँ आती है या फिर वे परिजनों व समाज के लोगो ? के साथ समायोजन करने में असमर्थ रहती है।

वृद्धों की आर्थिक समस्याएँ–

आर्थिक दबाव के कारण परिवार के सदस्य वृद्धों को परिवार पर बोझ समझते है। नई अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत आर्थिक सत्ता युवा पीढ़ी के हाथ में होती है। वृद्धों को अपने दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए युवा पीढ़ी पर निर्भर रहना पड़ता है जिससे वे स्वयं को उपेक्षित महसूस करते है। वृद्धों के बीमार होने पर बच्चों के पास न तो उनका इलाज कराने के लिए समय होता है और न ही वे उन पर धन खर्च करना चाहते है। ये सब देखकर वृद्ध अपने आपको पराश्रित अनुभव करते है और सोचती है कि जिनके लिए उसने अपनी पूरी पूॅजी लगााई है वह उसका साथ नहीं दे रहे है, ये परिस्थितियाँ उसके लिए अत्यन्त पीड़ादायक होती है।

भावात्मक समस्याएँ–

आज उस त्याग मूर्ति मॉ एवं पिता के बेटे उन्हे समुचित सम्मान नही देते तो माता एवं पिता का दिल टूट जाता है। घुटन से भरे वातावरण में पड़े रहकर उस मॉ एवं पिता की तृप्ति पूर्णतः मात्र दो रोटियॉ मिल जाने से नहीं हो पाती। ऐसे उपेक्षा पूर्ण व्यवहार से बच्चों पर निर्भर मॉ एवं पिता हो और उन्हें भार स्वरूप समझकर किसी प्रकार झेला जा रहा हो तो उनकी भावनाओं को अत्यधिक ठसे पहुॅचती है इस प्रकार के शारीरिक कष्टों के साथ – साथ मानसिक तनाव से भी ग्रस्त हो जाती है और फिर वे कुचली हुई दुर्भावनाएँ से कभी – कभी आक्रोश के रूप में फूट पड़ते है उन्हें उस अतीत के वे दिन बरबस स्मरण हो जाते है जब उन्हीं बच्चों के भविष्य को उज्जवल बनाने के खातिर उन्होने हर तरह से कष्ट सहकर, ऋणग्रस्त होकर शिक्षा दीक्षा और इनके भावी जीवन के विषय में अपने आपको लगा दिया था। लेकिन आज भावात्मक लगाव एवं श्रद्धा और सेवाभाव धीरे –धीरे समाप्त होता जा रहा है जिससे वृद्धों में मानसिक तनाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है परिवारों में वृद्ध मानसिक रूप से उत्पीड़त देखे जा रहे है। उनके समक्ष ऐसी परिस्थतियॉ उत्पन्न की जा रही है जिससे अपने आपको उपेक्षित महसूस कर रहे है। आज बड़ी – बड़ी बाते करने वाली युवा पीढ़ी भी भूल जाती है कि हमारे ही परिवार में वृद्धों की स्थिति कितनी दयनीय है। अधिकतर परिवारों में वृद्धों की मानसिक स्थिति चिन्तनीय है। पारिवारिक अवहेलना और अन्य अनके समस्याओं के चलते उनकी स्थिति इतनी खराब हुई है। निराशा और एकाकीपन के बोझ तले ही वे कमजोर हो गयी है। घर का कार्य करना एक नौकर जैसी ही जिन्दगी को दर्शाता है। उन्हे अपने जीवन के अन्तिम पढ़ाव में परिवार के सदस्यों के ताने और उपेक्षा भरी नजरों का सहना पड़ता है। जिसका उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

शारीरिक समस्याएँ–

वृद्धावस्था में शरीर कमजोर हो जाता है। कार्य करने की क्षमता समाप्त हो जाती है। व्यक्ति अपने को लाचार और दसूरों पर निर्भर समझने लगता है ऐसी स्थिति मे जबकि वृद्ध स्वयं अनके प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त होते है उन्हे परिवार से भी सहयोग के स्थान पर असहयोग ही प्राप्त होता है तो वे अपने आपको ओर अधिक पीड़ित समझने लगते है। कार्य करने की क्षमता न होते हुए भी परिवार के सदस्यों के द्वारा उनसे कार्य करवाया जाता है और यदि वे उसे ठीक प्रकार से नहीं कर पाती है तो उन्हें असम्मानजनक स्थिति से गुजरना पड़ता है। उन्हे ताने मारे जाते है तथा उन्हें बोझ समझा जाता है ऐसे में वृद्धों के लिए यह अवस्था एक अभिशाप बनकर रह जाती है और उनके लिए भगवान से मौत की दुआ मॉगने के अलावा कोई और दूसरा रास्ता नहीं बचता। यह अवस्था जीवन को अन्तिम पड़ाव एवं अनके समस्याओं से घिरे हुए है जिससे वृद्धों में निराशा, कुण्ठा, नकारात्मक व्यवहार तथा उत्तेजनाएँ आदि की भावनाएँ पनप जाती है।

वृद्धों की समस्याओं के कारण–

वृद्धावस्था मानव जीवन की एक गम्भीर, जटिल तथा सार्वभौमिक समस्या है तीव्र परिवर्तनों के दौर में परिवार की संरचना एवं प्रकार्यो मे हो रहे परिवर्तनों के फलस्वरूप परिवार, विधवाओं एवं वृद्धाओं की सहायता एवं सुरक्षा देने का कार्य पूर्व की भॉति नहीं कर पा रहे है। यही कारण है कि आज वृद्धों और परिजनों के बीच सफल समायोजन नहीं हो पा रहा है और वृद्धों का जीवन समस्याग्रस्त हो गया है। वृद्धावस्था एक बीमारी के समान है। वृद्धों की समस्याओं के लिए निम्नलिखित प्रमुख कारण उत्तरदायी है –

संयुक्त परिवार का विघटन–
संयुक्त परिवार के विघटन के कारण युवा पीढ़ी को अपने बुजुर्गो के प्रति उदासीनता ने आज हमारे समाज मे गम्भीर समस्या उत्पन्न कर दी है। संयुक्त परिवार में परिवार की बागडोर वृद्धो के हाथ मे होती थी और परिवार के महत्वपूर्ण निर्णय इन्हीं के द्वारा लिये जाते थे और वे मान्य होते थे। इसी कारण परिवार में उनका पूरा मान सम्मान होता था। उनकी देखरेख करना, उनकी सुख सुविधाओं का ध्यान रखना सभी सदस्यों की सम्मिलित जिम्मेदारी होती थी। वृद्धाएँ अपनी जिन्दगी सुखपूर्वक व्यतीत करती थी। उनको किसी प्रकार की कोई चिन्ता नहीं रहती थी। आज संयुक्त परिवार टूट रहे है। उनका स्थान एकाकी परिवार ले रहे है। वृद्धों का महत्व कम होता जा रहा है। उन्हे बोझ माना जा रहा है। परिवार की बागडोर युवा पीढ़ी के हाथ मे है। उन्ही के द्वारा परिवार के सभी निर्णय लिए जाते है।

भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि–
भौतिक सुख सुविधाओं की वृद्धि होने के कारण लोगों के रहन सहन व जीवन शैली मे परिवर्तन हो रहा है। इस नई जीवन शैली में लोग अपने आपको इतना अधिक व्यस्त पाते है कि उनके पास परिवार मे एक दूसरे से बात करने का पर्याप्त समय नहीं रहता है इसकी सबसे अधिक पीड़ा वृद्धों को झेलनी पड़ती है वृद्ध माता एवं पिता परिवार की परिधि से बाहर होते जा रहे है। सुख वैभव की वस्तुओ की अधिकता के कारण माता एवं पिता के लिए अपने घर में स्थान की कमी होती जा रही है। व्यक्ति को अपने आराम की वस्तुओं को खरीदने के लिए तो पैसे होते है पर वृद्ध माता एवं पिता की बीमारी के लिए पैसे नहीं होते।

नई और पुरानी पीढ़ी के बीच फासला–
बुढ़ापा, जीवन का विश्रान्तिकाल है और वृद्धावस्था में प्रत्येक वृद्ध अपने परिवार में रहना पसन्द करते है और आज की युवा पीढ़ी उनके साथ रहना पसन्द नहीं करती क्योकि उनके सामने वृद्धाओं से सामंजस्य बिठाने में एक पीढ़ी का फासला बाधक बनता है। युवा पीढ़ी वृद्धों को अपने स्वतन्त्र जीवन में बाधक के रूप में दखेती है और वृद्धों को आज के बदलते हुए परिवेश व जीवन शैली पसन्द नहीं है। उन्हीं सब कारणों से दोनो पीढियों के बीच टकराव उत्पन्न होता है जिससे वृद्धों के सामने समस्या उत्पन्न हो जाती है। नई पीढ़ी यह नहीं सोच पाती कि पुराना सब अर्थहीन नहीं होता और पुरानी पीढ़ी यह मान लेती है कि नई पीढी ने पूरी सत्ता अपने हाथ मे ले ली है और सह उसका दुरूपयोग कर उनका अपमान कर रही है।

औद्योगीकरण एवं नगरीकरण–
औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के कारण वृद्धाओं को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जिन वृद्धों के बेटे उद्योग धन्धे के लिए घर से बाहर चले जाते है वे अकेले रह जाती है। बीमारी, लाचारी, असुरक्षा और अकेलापन उन्हे खलने लगता है। वे अपने को असहाय व मजबूर समझने लगते है। औद्योगीकरण के कारण युवा पीढ़ी इतनी व्यस्त हो गयी है कि आज वृद्धों से बात करना तक पसन्द नहीं करते। वह समझती है कि इनसे बात करना अपना समय बर्बाद करना है। नगरीकरण के कारण व्यवसाय की बहुलता ही नहीं, आचार, प्रथा, परम्परा, रीति नीति की भी विविधता बढ़ती जाती है। परम्परागत मूल्य बदलते है और नये सामाजिक आदर्श स्थापित होते है जिसके साथ वृद्ध अनुकूलन नहीं कर पाते है। वृद्धों को यह महसूस होने लगता है कि उनके मान सम्मान मे कमी आ रही है। यहीं से हीनता और व्यर्थतता का बोझ उनके मन पर छा जाता है। शहरों मे एकल परिवार, छोटे मकान, और सीमित आय ने वृद्धाओं की समस्याओं को अधिक बढ़ा दिया है।

आधुनिकीकरण एवं पश्चिमीकरण–
आधुनिकीकरण प्रक्रिया के अन्तर्गत समाज परम्परागत ढॉचे से निकलकर प्रौद्योगिकीय और वैज्ञानिक विकास की ओर बढ़ता हैं पश्चिमीकरण, पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का भारतीय समाज और संस्कृति पर पडनें वाला प्रभाव है। आज शहरों के लोग तो आधुनिकता की ऑधी में फॅसे हुए है ही गॉवों के लोग भी इसकी परिधि में आ गये है। अब एकाकी परिवार आधुनिक स्वेच्छाचारी जीवन बिताने की इच्छा रखते है वृद्धों के परम्परावादी विचार आज युवा पीढ़ी को आधुनिक जीवन शैली अपनाने के मार्ग मे रोड़ा समझे जाने लगे है। पश्चिमीकरण ने युवा पीढ़ी के रीतिरिवाज, तौर तरीकों उनके खाने पीने का ढंग, फैशन, वेशभूषा आदि को अत्यधिक प्रभावित किया है और ये सब पुरानी पीढ़ी को रास नहीं आता है जिससे नई पीढ़ी आज वृद्धाओं के लिए समस्या का कारण बन गया है।

धन का महत्व–
आज की युवा पीढ़ी धन को अधिक महत्व देती है। वह धन कमाने में इतने व्यस्त है कि उसे किसी का ध्यान ही नही है बेटे बडे होकर अपनी मॉ एवं पिता को तभी पसन्द करते है जब उनके पास धन होता है। धन के न होने से वृद्धों को

कोई महत्व नहीं रह जाता है वह बोझ बनकर रह जाते है। बच्चों में न तो अपनी वृद्ध माता एवं पिता के प्रति दया और प्रेम है और न ही मान सम्मान। इस कारण से हमारी वृद्ध माता एवं पिता दुखी एवं उपेक्षित है।

व्यक्तिवादिता–

आज के आधुनिक युग मे नई पीढ़ी बहुत ही स्वार्थी हो गयी है। वह अपनी वृद्ध माता एवं पिता की देखभाल तभी करते है जब वह समझते है कि धन, दौलत, सम्पत्ति या कुछ और माता एवं पिता से मिल सकता है। स्वार्थवश उसके मन में अपनी वृद्ध माता एवं पिता के प्रति सेवा, दया, प्रेम, त्याग कम होता जा रहा है क्योंकि वह वृद्धों की सेवा व कर्त्तव्य को अपनी स्वतन्त्रता मे बाधक मानते है। वे अपने हित कि लिए वृद्धों को अनदखो कर देते है।

वृद्धों की समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव–

यह निर्विवाद सत्य है कि वृद्धावस्था कोई बीमारी नही बल्कि मानव के जीवन चक्र की एक अनिवार्य शारीरिक दशा है जिसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध आयु से है। भारतीय संस्कृति मे बुजुर्गो का स्थान सर्वोपरि रहा है। परम्परागत संयुक्त परिवार व्यवस्था, सामाजिक संगठन एवं वर्ण व्यवस्था इसका प्रमाण है कि उनकी क्या दशायें थी, बुजुर्गो को कैसा सम्मान दिया जाता था और उनकी परिवार में कैसी स्थिति थी। व्यक्तिवादी विचारधारा, भौतिक वादी दृष्टिकोण, पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति ने कर्ता के रूप में बुजुर्गो की सत्ता एवं शक्ति को ही प्रभावित नहीं किया है बल्कि वृद्धाओं की परिस्थितियों को भी प्रभावित किया है। यहॉ तक कि वृद्धों का परिवारों पर प्रभाव शून्य सा रह गया है क्योकि उनके हाथो से परिवार की सत्ता युवाओं के हाथों मे हस्तान्तरित हो गयी है। वृद्धों के महत्व को समझते हेतु उनकी समस्याओं के निराकरण के लिए निम्न सुझाव दिये जा सकते है।

1. सन्तान का यह नैतिक कर्त्तव्य एवं दायित्व है कि जिस मॉ एवं पिता ने जन्म से लेकर आत्मनिर्भर होने तक हमे सहारा दिया है उनके प्रति मन में कृतज्ञता के भाव जगें व मॉ एवं पिता को सहारा दिया जाय।

2. वृद्धों तथा परिजनों द्वारा सामंजस्य स्थापित करने के अधिकतम प्रयास किये जाने चाहिए।

3. परिवार में सभी सदस्यों को वृद्धों की परेशानियों को अच्छी तरह से समझना चाहिए व उसे दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

4. वृद्धों की आवश्यकताओं को नजरअन्दाज नहीं किया जाना चाहिए। उनके खान –पान, पूजा, स्नान, वस्त्र, आराम, सुख –दुख तथा मान सम्मान को पूरा ध्यान रखना चाहिए।

5. वृद्धों को चाहिए कि वह अपनी सोच को सकारात्मक बनाये रखे, नकारात्मक विचारों से बचें।

6. वृद्धों को आज महसूस कराना आवश्यक है कि आज जमाना तेजी से बदल रहा है और आजकल की युवा पीढ़ी वैसी नहीं हो सकती जैसे आप थी। ऐसे में आपको अपने विचारों को बदलने की कोशिश करनी चाहिए।

7. बुढ़ापा प्रकृति का अटल नियम है। अतः अपनी अवस्था के बारे में पहले से सचेत रहना चाहिए और अपने को बेकार न समझकर आज वृद्धों तथा युवा पीढ़ी दोनों को एक दूसरे के साथ तालमेल बिठाकर जीवन को प्रसन्नता से व्यतीत करना चाहिए।
8. वृद्धों को यह समझाया जाना चाहिए कि युवा पीढ़ी के कार्यो मे अनावश्यक हस्तक्षेप न करके आपको अपना समय समाज पत्रिका व अन्य पत्रिका, टेलीविजन, रेडियो आदि के द्वारा अपने को व्यस्त रखना चाहिए।
9. वृद्धाओं को परिवार के छोटे –मोटे कार्यो में परिवार के सदस्यों का हाथ बटाना चाहिए। इन कार्यो को करने से मन भी बहल जाता है और परिवार भी खुश रहता है।
10. यह स्पष्ट देखने मे आया है कि वृद्धावस्था मे वृद्धाएॅ अपने आपको असहाय एवं बेकार और असमर्थ महसूस करती है तथा उन्हें सहायता की आवश्यकता होती है। इस अवस्था मे उन्हें परिवार, समाज तथा सरकार द्वारा सहायता मिलनी चाहिए। अतः इन सब सुझावों पर अमल करने और मानने से कुछ हद तक समस्याओं का समाधान हो सकता है।

निष्कर्ष :–

यह निर्विवाद सत्य है कि वृद्धावस्था कोई बीमारी नहीं है बल्कि मानव के जीवन चक्र की एक अनिवार्य शारीरिक दशा है जिसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध आयु से लें भारतीय संस्कृति में बुजुर्गो का स्थान सर्वोपरि रहा है। परम्परागत संयुक्त परिवार व्यवस्था, सामाजिक संगठन एवं वर्ण व्यवस्था इसका प्रमाण है कि उनकी क्या दशाएॅ थी, बुजुर्गो को कैसा सम्मान दिया जाता है तथा उनकी परिवार एवं समाज मे कैसी स्थिति थी ? व्यक्तिवादी विचारधारा, भौतिकवादी दृष्टिकोण, पाश्चात्य

सभ्यता एवं संस्कृति ने मुखिया के रूप में बुजुर्गो की सत्ता एवं शक्ति को ह्रास ही नहीं किया गया है बल्कि वृद्धों की प्रस्थिति को भी कुप्रभावित किया है। यहॉ तक कि वर्तमान मे तो वृद्धों का परिवारों पर प्रभाव शून्य सा रह गया है क्यों कि उनके हाथों से परिवार की सत्ता युवा पीढ़ी के पास हस्तान्तरित हो गयी है। वर्तमान परिवर्तनशील परिप्रेक्ष्य एवं विकास के इस संक्रमणकालीन दौर मे नई पीढ़ी के लोग पुरानी विचारधारा वाली वृद्धों को अब बिल्कुल पसन्द नहीं करते । वृद्धों एवं युवाओं के बीच मानसिक तनाव एवं झगडे होते रहते है और पारिवारिक सुख शान्ति भंग हो जाती है। उपरोक्त समस्त तथ्यों की मौलिक, वस्तुनिष्ठ, तथ्यपरक एवं वैज्ञानिक जानकारी के लिए प्रस्तुत शोध पत्र एक लघु प्रयास है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पचौरी जे0 पी0 : वृद्धावस्था : एक सामाजिक विवेचन, समाज कल्याण पत्रिका, केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड, नई दिल्ली, अंक – 7, फरवरी 1992 पृष्ठ 20 – 37 ।
2. सह एस0 डी0 : वृद्धजन : सामान्य एवं सेवानिवृत एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण 'जनसहयोग' , शोध पत्रिका, पंजाव विश्व विद्यालय चण्डीगढ, 1995 पृष्ठ 7 – 10 ।
3. प्रोफेसर सिलावट सुधा एस0 : वृद्धावस्था की समस्याएॅ, 'सामाजिक सहयोग', त्रैमासिक शोध पत्रिका, श्री कृष्ण शोध संस्थान उज्जैन (म0 प्र0) 1955 पृष्ठ 11
4. गोपाल सुनील : *The Problem of the Tribal aged, Need to integrate them into the family. Samajic Sahyog, Quaterly Research Journal, Ujjain (M.P.) 1997, PP 40-45.*
5. रानी वन्दना : वृद्धों की पारिवारिक स्थिति, ''राधाकमल मुकर्जी चिन्तन परम्परा'' सामाजिक विज्ञानों की शोध पत्रिका, समाज विज्ञान विकास संस्थान, चांदपुर, बिजनौर (उ0 प्र0) अंक – 1 जनवरी – 27, 1999 पृष्ठ – 67